3

आदमी जिसने तीन सेनाओं को बचाया

(2 राजाओं 3:1–27)

हमारा पिछला पाठ "आदमी, जिसने बड़े-बड़े काम किए" पर था। कोई उस अध्ययन वाले दोनों आश्चर्यकर्मों को बुरे पानी को अच्छा बनाकर और ठट्ठा करने वाली भीड़ को श्राप देकर "छोटा" कह सकता है। जैसा कि हम इस पाठ में देखेंगे कि "बड़े" आश्चर्यकर्म और "छोटे" आश्चर्यकर्म परमेश्वर के सामने सब समान हैं। परन्तु वर्गों पर ज़ोर देने वाले व्यक्ति के लिए इस पाठ में जो एलीशा ने किया, वह "बड़ा" था: परमेश्वर ने इस नबी को इस्राएल के राजा यहोराम सहित तीन राजाओं और तीन शत्रुओं को बचाने के लिए इस्तेमाल किया।

एलिय्याह के साथ एलीशा की शार्गिदी अहाब के समय से आरम्भ होकर अहाब के पुत्र अहज्याह के संक्षिप्त शासन तक रही। एलीशा की अपनी सेवकाई का आरम्भ अहाब के बेटे में से एक और यहोराम के शासन में हुआ, तब इस नबी का कार्य येहू, यहोआहाज और योआश (या यहोआश) के शासनों तक रहा। जैसा संकेत दिया गया है, इस पाठ वाली घटना यहोराम के शासन काल में घटी।

शायद यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि एलीशा के जीवन की घटनाएं हर बार कालक्रम के अनुसार नहीं हैं। उदाहरण के लिए, 2 राजाओं 5 में गेहज़ी कोढ़ी बन गया था (आयत 27), पर अध्याय 8 में गेहज़ी राजा की परिस्थिति में था (आयत 4), जो कोढ़ी होने के बाद होना बिल्कुल असम्भव था। फिर, राजा योआश की मृत्यु की घोषणा (13:13) एलीशा से भेंट करने के लिए आए राजा यहोआश की कहानी आती है (आयतें 14–19)। इसका अर्थ यह हुआ कि हम पक्का नहीं बता सकते कि हमारी यह कहानी एलीशा के जीवन में कहां फिट बैठती है। 2 इतिहास 21:12–15 के अनुसार यहोशापात की मृत्यु के बाद यहोशापात के पुत्र को एलिय्याह का एक पत्र मिला, परन्तु यहोशापात 2 राजाओं 3 वाली कहानी का भाग है (आयत 7)। इससे यह संकेत मिल सकता है कि एलिय्याह 2 राजाओं 3 वाले अभियान के समय भी जीवित था और यह कि उसकी सेना के साथ उसके प्रतिनिधि के रूप में वहां था।

संक्षिप्त कालक्रम की आवश्यकता नहीं है। हो सकता है कि बाइबल का प्रबन्ध हर बार कालक्रम के अनुसार न हो, पर यह कभी बेतरतीब नहीं हुआ। यहां पर विवरण में यह कहानी यह दिखाने के लिए जोड़ी गई है कि अपने समय के अधिकारियों के साथ एलीशा ने कैसे काम किया और यह दिखाना कि परमेश्वर ने अपने लोगों को बचाने के लिए कैसे उसे इस्तेमाल किया।

असहनीय परिस्थिति (3:1-10)

पीछे 2 राजाओं 1 में लिखा गया था कि "अहज्याह मर गया" (आयत 17क)। अहज्याह अपने पिता अहाब की मृत्यु के बाद इस्राएल के उत्तरी राज्य का राजा बन गया, परन्तु

उसने लगभग 853–52 ई.पू. में केवल 2 वर्ष शासन किया (देखें 1 राजाओं 22:40, 51)। जब अहज्याह मर गया, ''उसकी संतान न होने के कारण यहोराम [अहाब का अगला सबसे बड़ा बेटा] उसके स्थान पर राजा बना'' (2 राजाओं 1:17ख)। यह ''यहूदा के राजा यहोशापात के पुत्र यहोराम के दूसरे वर्ष में'' हुआ (आयत 17ग)।

एक मिनट रुकना! *यहोराम* ने *यहोराम* के दूसरे वर्ष में शासन करना आरम्भ किया। याद रखें कि एलीशा की सेवकाई विभाजित राज्य के समय हुई थी, जब इस्राएल के उत्तरी राज्य (जहां एलीशा रहता और काम करता था) में राजा थे और दक्षिणी राज्य में राजा थे, तब यह समय विभाजित राज्य के समय का था। इस्राएल में यहोराम के शासन में, यहूदा में एक और यहोराम था, जो अपने पिता के साथ मिलकर शासन करता था (तुलना 2 राजाओं 1:17 और 3:1)। कितना उलझाने वाला है! शायद इससे सहायता मिल जाए, यदि हम यहूदा (दक्षिणी) के राजा को ''यहोराम'' न कहें पर इस्राएल के राजा (उत्तर में) के लिए इस नाम का लघु रूप (''योराम'') इस्तेमाल करें।

2 राजाओं 3 में 1:17 से योराम (इस्राएल के राजा) की कहानी लें:

> यहूदा के राजा यहोशापात के अठारहवें वर्ष [लगभग 852–841 ई.पू.] में अहाब का पुत्र यहोराम शिमरोन में राज्य करने लगा, और बारह वर्ष तक राज्य करता रहा। उसने वह किया जो यहोवा की दृष्टि में बुरा है तौभी उस ने अपने माता–पिता के बराबर नहीं किया वरन अपने पिता की बनवाई हुई बाल की लाठ को दूर किया (आयतें 1, 2)।

स्पष्टतया अहाब ने मूर्तिपूजकों की देवी के लिए बनाए मन्दिर में बाल की एक मूर्ति रखी थी (देखें 1 राजाओं 16:32)। योराम ने उस मूर्ति को ''हटा दिया'' परन्तु उसे नष्ट नहीं किया। (बाद में इसे येहू ने नष्ट करना था; देखें 2 राजाओं 10:27।) ''तौभी'' 2 राजाओं के लेखक ने कहा कि यारोबाम ''तौभी वह नबात के पुत्र यारोबाम के ऐसे पापों में जैसे उस ने इस्राएल से भी कराए लिपटा रहा और उन से न फिरा'' (3:3)। अन्य शब्दों में योराम अभी भी अपनी प्रजा को सोने के उन बछड़ों के आगे झुकने के लिए प्रोत्साहित करता था, जिन्हें यारोबाम ने बेतेल और दान में बनवाया था (देखें 1 राजाओं 12:26–33; 13:33)। उसके लिए ऐसा करना राजनैतिक रूप से उचित था।

एक समस्या

इसकी पृष्ठभूमि यही है और अब हम अपनी कहानी के लिए तैयार हैं। ''मोआब का राजा मेशा बहुत सी भेड़–बकरियां रखता था, और इस्राएल के राजा को एक लाख बच्चे और एक लाख मेंढ़ों का ऊन कर की रीति से दिया करता था'' (2 राजाओं 3:4)।[1] मोआब जो इस्राएल की दक्षिण पूर्वी सीमा पर है (''एलीशा के समय में इस्राएल, यहूदा और आसपास के देश'' मानचित्र देखें) राजा दाऊद के अधीन था और उसे जज़िया देता था (1 इतिहास 18:1, 2)। ''जब अहाब मर गया, तब मोआब के राजा ने इस्राएल के राजा से बलवा किया'' (2 राजाओं 3:5; देखें 1:1)। मेशा ने अहाब की मृत्यु के बाद के उलझन भरे समय और अहज्याह के संक्षिप्त शासन के दौरान दाऊद को भेंट देना बन्द करने के उपयुक्त समय के रूप में इस्तेमाल किया।

जब योराम सिंहासन पर बैठा तो उसने आमदनी के मूल्यवान स्रोत को फिर से बहाल करने का निश्चय किया। पहले उसने इस्राएल में सेना में भर्ती की (3:6)। फिर उसने यहूदा के राजा यहोशापात को संदेश भेजा (आयत 7क)। योराम मोआब पर दक्षिण से आक्रमण करना चाहता था (आयत 8), शायद वह इसलिए क्योंकि मोआब की उत्तरी सीमा उसकी दक्षिणी सीमा से अधिक मज़बूत थी–परन्तु ऐसा करने के लिए उसे यहूदा में से होकर जाना पड़ता। उसने यहोशापात से विनती की: "मोआब के राजा ने मुझ से बलवा किया है, क्या तू मेरे संग मोआब से लड़ने को चलेगा?" (आयत 7ख)।

योराम के पिता अहाब ने अराम (सीरिया) से लड़ने के लिए पहले यहोशापात को भर्ती किया था (देखें 1 राजाओं 22:1-40)। यहोशापात को अहाब और अहज्याह के साथ अपना समझौता करने के कारण डांट पड़ी थी (देखें 2 इतिहास 19:1, 2; 20:35-37), परन्तु स्पष्टतया वह सीखने में धीमा था। वह योराम के साथ जाने को मान गया (2 राजओं 3:7ग; 1 राजाओं 22:4 से तुलना करें)। शायद इसका एक कारण यह था कि मोआब ने पहले देश पर हमला किया था (देखें 2 इतिहास 20:1-30) और वह उस पर अभी भी नाराज़ था।[2]

योजना

यहोशापात ने योराम से उसकी युद्धनीति पूछी: "हम किस मार्ग से [मोआब को] जाएं?" (2 राजाओं 3:8क)। योराम ने उत्तर दिया, "एदोम के जंगल से होकर" (आयत 8ख)। योजना खारे समुद्र के दक्षिणी किनारे के पास एदोम में जो मोआब के दक्षिण में है, पूर्व की ओर यहूदा में से दक्षिणी में जाने की थी ("एलीशा के समय में इस्राएल, यहूदा और आस-पास के देश" मानचित्र देखें।) एदोम यहूदा का एक अधीन देश था, इसलिए इस देश में उनका किसी ने विरोध नहीं करना था। वे एदोमियों में से अतिरिक्त सिपाहियों की भर्ती भी कर सकते थे। फिर एदोम से मोआब की दक्षिणी सीमा पर हमला कर सकते थे। लगा कि यह चाल बहुत अच्छी है। अफ़सोस कि किसी ने परमेश्वर से यह पूछने की आवश्यकता नहीं समझी कि वह क्या चाहता है।

पहले तो सब कुछ योजना के अनुसार हुआ। योराम, यहोशापात और उनकी सेनाएं अदोम में पहुंच गईं, जहां एदोम का राजा[3] और उसकी सेना को अपने स्थान मिल गए (आयत 9क)। फिर वे मोआब की दक्षिणी सीमा की ओर जाते हुए मार्ग में अदोम के जंगल में चले गए।

दुर्दशा

"अदोम के जंगल" में पहुंचने पर, मोआब के सामने-सामने (आयतें देखें 21-24) वे सात दिन चलते रहे (आयत 9ख) और उन्हें पानी न मिला। भूगोल के जानकार हमें बताते हैं कि एक नदी उस क्षेत्र में बहती है। कोई संदेह नहीं कि योराम उस नाले पर सेना के लिए पानी जुटाने पर विचार कर रहा था, परन्तु यह सूख गया था।[4] "तब सेना और उसके पीछे-पीछे चलने वाले पशुओं के लिए कुछ पानी न मिला" (आयत 9ग)। आमतौर पर मनुष्य तीन मिनट तक हवा के बिना, तीन दिन तक पानी के बिना, तीन हफ़्तों तक भोजन के बिना रह सकता है।[5] एफ़. डब्ल्यू. क्रमुचर ने इस परिस्थिति को एक रुखे वाक्य में दिखाया है: "बेहोश हो रहा योद्धा हांफते हुए भूमि पर गिर जाता है; थकान और प्यास से परेशान घोड़ा, आगे नहीं बढ़ सकता, और [गधे]

अपने बोझ तले चूर होकर गिर जाते हैं।''[6] लहू की एक बूंद भी बहने से पहले इस समझौते को पराजय देखनी पड़ी।

उन्हें जिनका विश्वास कमज़ोर है या है ही नहीं, योराम का बड़ा अच्छा उत्तर है कि उसने परमेश्वर को दोष दिया। उसने कहा, ''हाय! यहोवा ने इन तीन राजाओं को इसलिए इकट्ठा किया, कि उनको मोआब के हाथ में कर दे'' (आयत 10)। उसकी मान्यताओं पर ध्यान दें:

- पहली बात तो यह कि इस सौदे की मंज़ूरी यहोवा ने दी।
- कि उस विनाशकारी योजना के लिए जिसने उन्हें वहां लाया था, ज़िम्मेदार यहोवा था।
- यहोवा ने यह सब उन्हें नष्ट करने के लिए किया।

अब इन तथ्यों पर विचार करें:

- इस अभियान के सम्बन्ध में यहोवा से पूछा नहीं गया था।
- यह विनाशकारी योजना स्वयं योराम द्वारा बनाई गई थी।
- उनका सर्वनाश करने के बजाय यहोवा ने उन्हें उनकी मूर्खता में से निकाला।

नबी

सौभाग्य से वहां एक जन ऐसा था, जिसका यहोवा का ज्ञान योराम के ज्ञान से बेहतर था। यहोशापात, जिसमें अभी भी अपने दादा के दादा दाऊद का कुछ विश्वास था, ने पूछा ''क्या यहां यहोवा का कोई नबी नहीं है, जिसके द्वारा हम यहोवा से पूछें?'' (आयत 11क; 1 राजाओं 22:7 से तुलना करें)। एक पुरानी कहावत याद आती है: ''कभी न होने से देर भली।''

राजाओं में से किसी को पता नहीं था कि परमेश्वर का नबी उनके साथ है या नहीं, पर एक सेवक को पता था। ''इस्राएल के राजा के किसी कर्मचारी ने उत्तर देकर कहा, हां, शापात का पुत्र एलीशा, जो एलिय्याह के हाथों को धुलाया करता था वह तो यहां है'' (आयत 11ख)। हम पक्का नहीं बता सकते कि एलीशा सेना के साथ क्या कर रहा था, पर हम मान लेते हैं कि यहोवा ने होने वाली परेशानी को जानकर जो उन पर आनी थी, दृश्य में अपने आदमी को रखना चाहा।[7]

चाहे एलीशा की सेवकाई यहूदा में नहीं, बल्कि इस्राएल में थी, फिर भी स्पष्ट है कि यहोशापात ने उसके बारे में सुना हुआ था और उसे सर्वशक्तिमान का नबी मानता था। उसने कहा, ''यहोवा का वचन उसके पास पहुंचा करता है'' (आयत 12क)। NCV में है ''वह यहोवा की सच्चाई बोलता है।

आमतौर पर राजा लोग अपने सामने पेश होने के लिए प्रजा को बुलाने के लिए दूतों को भेजते थे। बिना पानी वाले जंगल में तीनों राजाओं की हताशा इस तथ्य में देखी जा सकती है कि वे स्वयं दीन हुए और एलीशा के डेरे में ''उसके पास गए'' (आयत 12ख)। यह दृश्य तो देखने वाला होगा, जिसमें शाही लिबास पहने तीन राजा एक छोटे से आदमी के आगे झुके हुए हैं।

एक पल के लिए स्थिति पर विचार करें। उनके पास हज़ारों की सेना थी जिसमें असले और हथियारों के साथ प्रशिक्षित सिपाही थे। यदि आप उस सेना को बचाने के लिए एक आदमी को चुनना चाहें, तो वह कौन होगा? सबसे कम पसन्द किया जाने वाला व्यक्ति वही होगा, जिसके पास कोई हथियार या बारूद न हो, जो युद्ध की कला में कुशल न हो। तौभी परमेश्वर ने ऐसे

ही आदमी को चुनना था।

असम्भावित समाधान (3:13-19)

एक डांट

यदि मेरे सामने तीन राजा खड़े होते, मैं तो शायद मूक सा हो जाता, पर एलीशा नहीं हुआ। जब राजाओं का सामना करने की बात आई तो वह अपने पूर्वाधिकारी की तरह ही निर्भय था।

उसके पहले शब्द तो योराम के लिए थे: ''मेरा तुझ से क्या काम है?'' (आयत 13क)। CJB में ''तेरा और मेरा साझा क्या है?'' है। एलीशा ने राजा से कहा, ''अपने पिता [अहाब] के भविष्यवक्ताओं और अपनी माता [इज़ेबेल] के नबियों के पास जा'' (आयत 13ख)। योराम ने बाल की मूर्ति हटवाकर अच्छा संकेत तो दिया था (आयत 2), परन्तु उसने बाल की पूजा को खत्म करने का कोई वास्तविक प्रयास नहीं किया (देखें 10:19)। योराम की माता इज़ेबेल अभी भी जीवित थी, और वह बाल की पूजा के पीछे पागल थी। इस बात को ध्यान में रखें कि बाल के मानने वालों का विश्वास था कि वह प्रकृति का देवता है, जो बारिश देता है। एक अर्थ में एलीशा ने योराम से कहा, ''यदि बाल सचमुच में देवता है, तो पानी के लिए तुम उस के पास क्यों नहीं जाते? तुम मेरे पास आने के बजाय अपने नबियों के पास क्यों नहीं जाते?''

एलीशा की चुनौती को आज हर देश में सुना जाना चाहिए। लाखों लोग यहोवा की ओर से सांसारिक अभिलाषा, आनन्द और सफलता के अपने ''देवताओं'' की ओर मुड़ गए हैं। अन्यों का मानना है कि मनुष्यजाति का ''उद्धार'' विज्ञान, शिक्षा और तकनीक है। तौभी जब विपत्ति पड़ती है तो ये आधुनिक ''देवता'' वैसे ही बेकार साबित होते हैं, जैसे बहुत पहले बाल देवता हुआ था। इस कारण कुछ लोग घुटनों के बल आकर पुकारते हैं, ''हे प्रभु हमारे पास ऐसा कर!'' कितना बुरा होगा यदि उसका उत्तर यह हो कि ''तुम मेरे पास क्या लेने आ रहे हो?'' तुम ''देवताओं के पास जाओ जिनकी रोज़ 'पूजा' करते हो! वही तुम्हारी सहायता करेंगे!''

एलीशा के कठोर शब्द योराम को दीन बनाने के लिए थे। राजा ने उत्तर दिया, ''ऐसा न कह, क्योंकि यहोवा ने इन तीनों राजाओं को इसलिए इकट्ठा किया, कि इनको मोआब के हाथ में कर दे'' (आयत 13ग)। यह उत्तर तो उस आरम्भिक टिप्पणी के जैसा लगता है (आयत 10), परन्तु शायद हमें लगता है कि ज़ोर अलग बात पर है। हो सकता है कि योराम मान रहा हो कि वह इस योग्य नहीं है कि यहोवा की ओर से उस पर विचार किया जाए, परन्तु कठिन घड़ी में एक नहीं बल्कि तीन राजा थे। शायद वह कह रहा था, ''मेरी कमियों के लिए अन्य सभी को दण्ड मत दो।'' एक प्राचीन संस्करण में यहां जोड़ा गया है, ''मैं तुझ से विनती करता हूं, इस अशुद्धता के पापों को स्मरण में न ला, बल्कि हमारे लिए दया मांग।''[8]

एलीशा अभी भी क्रोध में था। उसने उत्तर दिया, ''सेनाओं का यहोवा जिसके सम्मुख मैं उपस्थित रहा करता हूं, उसके जीवन की शपथ यदि मैं यहूदा के राजा यहोशापात का आदर मान न करता, तो मैं न तो तेरी ओर मुंह करता और न तुझ पर दृष्टि करता'' (आयत 14)। CJB में है ''या तेरा ध्यान करता।''

यहोशापात सिद्ध नहीं था (देखें 1 राजाओं 22:43ख), पर उसने प्रभु में एक मूल विश्वास

को बनाए रखा *था* (देखें 1 राजाओं 22:43क; 2 इतिहास 17:3-6; 19:4-11; 20:5-21)। इससे भी महत्वपूर्ण यह बात कि वह राजा दाऊद का वंशज था, और परमेश्वर ने शपथ खाई थी कि उसकी दयालुता दाऊद के घराने से न हटेगी (2 शमूएल 7:15, 16)। एक भले व्यक्ति का प्रभाव अभी भी था! इस पाठ का नाम ''आदमी जिसने तीन सेनाओं को बचाया'' है। वास्तव में उन सेनाओं को बचाने में *तीन* लोगों यानी एलीशा, यहोशापात और दाऊद का हाथ था।

एक विनती

एलीशा ने राजा से कहा, ''अब किसी बजाने वाले को मेरे पास ले आओ'' (2 राजाओं 3:15क) यानी ''जो तार वाला साज़ बजाता हो।''[9] NIV में है ''वीणा वादक'' हम नहीं जानते कि एलीशा ने बजाने वाले को क्यों बुलाया। कई बार भविष्यवाणी के सम्बन्ध में संगीत के साज़ों का उल्लेख हुआ है (देखें 1 शमुएल 10:5; 1 इतिहास 25:3), जिस कारण कुछ लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि वे पुराने नियम में भविष्यवाणी का अभिन्न अंग थे। परन्तु एलीशा ने केवल यहीं पर विनती की।

यह सम्भावना अधिक लगती है कि जीवनभर के विद्रोह के बाद प्रभु को बुलाने में योराम की गुस्ताखी से परेशान नबी को जारी रखने से पहले शांत होने की आवश्यकता लगी। दाऊद राजा शाऊल को शांत करने के लिए साज़ बजाया करता था (1 शमूएल 16:16, 23) पर हम में से अधिकतर लोग मानेंगे कि ''संगीत क्रुध मन को शांत करने का काम करता है।''[10] (मैं इसमें सुधार करके कहता हूं कि *कुछ* संगीत मुझे सुकून देता है, पर कुछ आधुनिक कथित ''संगीत'' का असर बिल्कुल उलट होता है!)

एक शर्त

संगीतकार को बुलाने का एलीशा का जो भी उद्देश्य रहा हो, पर इसका असर हुआ। ''अब कोई बजवैय्या मेरे पास ले आओ। जब बजवैय्या बजाने लगा, तब यहोवा की शक्ति एलीशा पर हुई'' (2 राजाओं 3:15ख)। यानी प्रभु का आत्मा एलीशा के ऊपर आया और उसने उसे दुविधा से निकलने का परमेश्वर का समाधान दिया। यहोवा का ''असम्भावित समाधान'' क्या था? गड्ढे खोद!

> इस नाले में तुम लोग इतना खोदो, कि इस में गड्ढे ही गड्ढे हो जाएं।[11] क्योंकि यहोवा यों कहता है, कि तुम्हारे सामने न तो वायु चलेगी, और न वर्षा होगी; तौभी यह नाला पानी से भर जाएगा; और अपने गाय बैलों और पशुओं समेत तुम पीने पाओगे (आयतें 16, 17)।

''गाय बैल'' उस वाक्य में उन पशुओं को कहा गया होगा, जिन्हें वे खाने के लिए लाए थे, जबकि ''पशु'' उन पर बोझ बने जानवर होंगे। परमेश्वर ने सब के लिए सब कुछ देना था और सब ने पीना था।

एलीशा ने कहा, ''यह यहोवा की दृष्टि में छोटी सी बात है'' (आयत 18क)। NIV में ''यहोवा की नज़रों में यह आसान बात है'' है। यह ''छोटी सी बात,'' ''आसान बात'' थी? फिर अपने मन में उस दृश्य की कल्पना करें: सूखी और दरारें पड़ी पृथ्वी, झुलसाता हुआ सूरज, सूख

चुके पौधे, निराश हो चुकी सेना। कई मील तक पानी नहीं था। हवा या बारिश का कोई प्रमाण नहीं था। तौभी एलिय्याह ने कहा कि घाटी को पानी से भरना ''आसान बात'' है? हां, ''यहोवा की दृष्टि में'' यह आसान ही था। परमेश्वर के लिए कोई ''बड़ा'' आश्चर्यकर्म या ''छोटा'' आश्चर्यकर्म नहीं होता। उसकी नज़र में सब समान हैं।

इस अवधारणा को उन लोगों को समझ जाना चाहिए जो आज आश्चर्यकर्म करने का दावा करते हैं। वह यह ज़ोर देते हैं कि यदि कोई ''आसान'' आश्चर्यकर्मों (जैसे ''भाषाओं में बोलना'') से आरम्भ करें, तो अन्त में वह ''कठिन'' आश्चर्यकर्म (जैसे टूटा हुआ अंग जोड़ना या मुर्दे को जिलाना) भी कर सकता है। यदि ये लोग सचमुच में भाषाओं में (जिन्हें उन्होंने सीखा नहीं है) बोल सकते हों तो वे मुर्दों को भी जिला सकते थे। यहोवा की नज़र में इनमें से कोई भी ''आसान बात'' होती। उनके ''कठिन'' आश्चर्यकर्म करने की क्षमता इस बात का प्रमाण है कि वे वास्तव में ''आसान'' आश्चर्यकर्म नहीं कर रहे थे।

एलीशा ने आगे कहा, ''यहोवा मोआब को भी तुम्हारे हाथ में कर देगा'' (आयत 18ख)। अभी के लिए सेना को जान की पड़ी थी न कि जीत की, परन्तु यहोवा ने दोनों का वायदा दिया। जिस आश्चर्यकर्म से उनके प्राण बचने थे उसी से मोआबियों का अन्त भी होना था। जब एक ही आश्चर्यकर्म से दो मसले हल हो जाएं तो दो आश्यर्चकर्मों की क्या आवश्यकता?

जब मोआबियों को उनके हाथ में दे दिया गया, तो इस्राएलियों ने उन्हें ''सब गढ़वाले और उत्तम नगरों को नाश करना, और सब अच्छे वृक्षों को काट डालना, और जल के सब खेतों को भर देना, और सब अच्छे खेतों में पत्थर फैंककर उन्हें बिगाड़ देना'' था (आयत 19)। ''अच्छा पेड़'' सम्भवतया फल देने वाला पेड़ था। देश को पत्थरों से बिगाड़ देने की बात के सम्बन्ध में, उस इलाके की ज़मीन बहुत ही पथरीली है। ज़मीन को खेती के लिए तैयार करने के लिए पत्थर निकालकर उन्हें वहां से हटाकर खेत के एक कोने में लगा दिया जाता था। पत्थरों को फिर से लगा देने पर खेत फिर बेकार हो जाता। रूपरेखा में दिया यह ढंग तो कई बार ''झुलसी हुई भूमि की नीति'': ''पीछे कुछ न छोड़ना जिसका इस्तेमाल शत्रु कर सके'' कहा जाता है। स्पष्टतया परमेश्वर ने ठान लिया था कि मोआबी लोग दण्ड के योग्य हैं[12] (यशायाह 15 और 16 से तुलना करें)।

अद्वितीय सफलता (3:20-25क)

राहत

राजाओं ने सिपाहियों से गहरी खाइयां खुदवाईं थीं। यहोशापात ने इसलिए खुदवाईं होंगी क्योंकि उसे एलीशा में विश्वास था, जबकि योराम ने हो सकता है कि निराशा में खुदवाईं हों। खाइयां खुदवाने के पीछे उनका कारण जो भी रहा हो, ''विहान को अन्नबलि चढ़ाने के समय एदोम की ओर से जल बह आया, और देश जल से भर गया'' (आयत 20)। यह सम्भवतया एदोम के दूरस्त पहाड़ों में भारी बारिश से हुआ होगा और पानी चौड़ी स्पाट घाटी की ओर उत्तर में बह गया, जहां सिपाहियों ने डेरा किया हुआ था। भूगोल के विद्वान हमें बताते हैं कि इस तराई की ढलानें खारे समुद्र की ओर थीं। इसी कारण बारिश का पानी बहने से रोकने के लिए गड्हे

बनाना आवश्यक है। जे. डी. हैडली ने इस नाटकीय क्रम को इस प्रकार चित्रित किया:

> दिन ढल गया और शाम को लहू के रंग का सूरज बिन बादल वाले आकाश में उतर गया, इसकी अन्तिम किरणें विशाल और निर्जल जंगल पर पड़ रही थीं। तारे निकल आए, शांत आकाश दूर तक फैले डेरे के ऊपर तक झुका हुआ था, इसके झंडे हवा न चलने से स्थिर थे और तम्बू ताने [सेना], प्यास से हांफते हुए, सोने के लिए लेट गई। पर उनके आस पास सब शांत होने पर, दूरस्त पहाड़ों पर दूर कहीं बादल बारिश की बौछार कर रहे थे। उनकी ओर आते हुए नालों ने सूखी नदियों को भर दिया और झरने बढ़ते हुए जल की बाढ़ से तर हो गए, और सुबह तक ज़ोरदार तूफ़ान की तरह तराई में से बह रहे थे। जब तुरही की आवाज़ से [सिपाही] नींद से जागे, तो जहां तक नज़र जा सकती थी उन्हें पानी की चमक ही नज़र आई। सुबह की हवा के ऊपर एक ऊंचा शोक था, और वे अपनी प्यास बुझाने के लिए उस ओर चल दिए।[13]

यह विवरण के यह ''सवेरे अन्नबलि चढ़ाने के समय'' (आयत 20) महत्वपूर्ण है। अधिकतर लोग इस बात से सहमत हैं कि यह हवाला यरूशलेम में मन्दिर में दिन की पहली भेंट के सम्बन्ध में है, जो सूर्योदय के समय में होती थी। हो सकता है कि यह शब्द केवल समय का संकेत देने के लिए जोड़े गए हों; परन्तु यदि ऐसा होता, तो इसके लिए ''सूर्योदय के समय'' कहना अधिक आसान होता। लेखक ने जान-बूझकर यरूशलेम में याजकों द्वारा किए जा रहे काम को एदोम के जंगल में यहोवा द्वारा किए जा रहे काम से जोड़ा। यह पता चलना अद्‌भुत है कि अपने देश में की गई मेरी प्रार्थनाओं का असर सैकड़ों हज़ारों मील दूर किसी देश की घटनाओं पर हो सकता है!

प्रतिफल

प्रतिज्ञा का पहला भाग पूरा हो चुका था क्योंकि सेना के पास पानी था। अब प्रतिज्ञा के दूसरे भाग में मोआब को उनके हाथों में दिया जाएगा तो क्या होगा? इस्राएली सेना के मोआब की ओर बढ़ने पर, मोआबियों ने ''यह सुना, कि राजाओं ने हम से युद्ध करने के लिए चढ़ाई की है।'' उन्होंने फुर्ती से सभी उपलब्ध अधिकारियों को बुलाया और उन्हें सीमा पर तैनात कर दिया (आयत 21)। कोई संदेह नहीं कि मोआबियों को मैदान को घेरे उस सेना को देखकर परेशानी हुई जो शीघ्र ही उन पर आक्रमण करने वाली थी।

सुबह-सुबह खाइयां पानी से भरी हुई थीं, मोआबी सिपाही ''जल्दी उठ गए'' और उस ओर तराई में देख रहे थे, जहां सेना ने डेरा किया हुआ था। उन्होंने पानी देखा पर उस दृश्य का अर्थ गलत लगाया। जब ''सूर्य की किरणें उस जल पर पड़ीं,'' ''मोआबियों को सामने की ओर से लहू सा लाल दिखाई पड़ा।'' (आयत 22)। हो सकता है कि पानी कीचड़ से लाल हो गया हो। हो सकता है कि यह घाटी के आस-पास की लाल चोटियों का प्रतिबिम्ब दिखाई दिया हो या शायद पानी के तल पर सूर्योदय की गुलाबी चमक का अक्स दिखाई दे रहा हो।

मोआबियों के पास यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं था कि जो वह देख रहे थे वह पानी ही हो। उन्हें मालूम था कि नदी सूखी हुई है और पिछली रात उस क्षेत्र में कोई बारिश भी

नहीं हुई थी (आयत 17)। परन्तु उनके पास यह विश्वास करने का कारण था कि यह लहू है। उन्हें जिस समझौते का सामना करना पड़ा वह कठिन था, जो उन देशों से मिलकर बना था जो आमतौर पर एक-दूसरे के विरोधी थे। इस कारण उन्होंने निष्कर्ष निकाला, ''नि:सन्देह वे राजा एक-दूसरे को मारकर नाश हो गए हैं'' (आयत 23क)। यह तथ्य कि यहूदा पर हाल ही की एक ऐसी ही विपत्ती का सामना मोआब को करना पड़ा था (2 इतिहास 20:23)। सम्भवतया इसका योगदान इस निष्कर्ष में है।

मोआबी लोग अति आनन्दित हुए। उन्होंने एक-दूसरे के पास चिल्लाते हुए कहा, ''इसलिए अब हे मोआबियो लूट लेने को जाओ'' (आयत 23ख)। मैं उन्हें अपनी ढालें और भाले छोड़कर बेपरवाही से इस्राएली छावनी की ओर भागते देख सकता हूं। तलवारें म्यान में रख दी गईं थीं और उनका मन लड़ाई की ओर नहीं बल्कि लड़ाई की लूट की ओर लगा हुआ था, उनकी आंखों को खतरे की नहीं, बल्कि धन की तलाश थी। उन्हें हमले की चिंता नहीं, बल्कि छावनी को लूटने का ध्यान था।

इसी दौरान, अपनी प्यास बुझाने के बाद इस्राएली (सम्भवतया एलीशा के निर्देश के अनुसार) छिप गए और घात लगाकर लेटे हुए थे। जब बेपरवाह शत्रु के सिपाही उनकी छावनी तक आए, तो वे ''उठकर मोआबियों को मारने लगे'' (आयत 24क)। अचानक मैदान में सचमुच का लहू बहने लगा। मोआबी ''उनके सामने से भाग गए; और वे मोआब को मारते-मारते उनके देश में पहुंच गए'' (आयत 24ख)। इस्राएलियों ने मोआब तक पहुंचाकर ''झुलसी हुई भूमि की नीति'' को लागू किया, जिसकी उन्हें आज्ञा नहीं थी (आयत 25क)।

एक अनापेक्षित परिणाम (3:25ख-37)

विजय की एक टिप्पणी के साथ कहानी को समाप्त करने की यह सही जगह लगेगी, परन्तु अन्तिम विजय उनकी समझ से बाहर होकर उन्हें एक अनापेक्षित परिणाम मिला।

विजयी इस्राएली किरहरेसेत तक आगे बढ़ते रहे (आयत 25ख)। CJB में है ''अन्त में, पीछे बची पत्थर की अपनी दीवार के साथ केवल किरहरेसेत ही रह गया।'' किरहरेसेत को आधुनिक केरक माना जाता है जो खारे समुद्र के लगभग ग्यारह मील पूर्व में है। (''एलीशा के समय में इस्राएल, यहूदा और आस-पास के देश'' मानचित्र देखें।) किरहरेसेत ''मोआब के सबसे मज़बूत गड्ढों में से एक था''[14] (देखें यशायाह 15:1; 16:7, 11; यिर्मयाह 48:36)। जी. राविल्सन ने यह विवरण दिया है:

> यह स्थिति किसी बड़े सामर्थी व्यक्ति की है, किला पहाड़ी की ढलान की चोटी पर है, जो एक गहरी और तंग तराई के बीच में, जो फिर पूरी तरह से पहाड़ों से घिरा हुआ, किले से ऊंचा। यह मोआबियों द्वारा प्राचीन काल के किसी क्षेत्र के भीतर सबसे मज़बूत स्थिति होगी।[15]

इस्राएल के गोफनों (2 राजाओं 3:25ग) का ऐसे किले पर कम ही प्रभाव हुआ होगा।

निराशा

मोआब के राजा मेशा किरहरेसेत के किले की ओर भाग गया। उसने एक निराशाजनक

कदम उठाने की कोशिश की। ''यह देखकर कि हम युद्ध में हार चले, मोआब के राजा ने सात सौ तलवार रखने वाले पुरुष संग लेकर एदोम के राजा तक पांति चीरकर पहुंचने का यत्न किया'' (आयत 26क)। हो सकता है कि उसे लगा हो कि एदोमी सेनाएं कमज़ोरी की बात होगी। शायद उसने यह भी विचार किया कि एदोम किसी समय के मोआब की तरह ही मातहत देश था जिस कारण वह अपने लिए अपने पक्ष में लड़ाने के लिए ऐदोम के राजा को साथ ले सकता था।

जब वह प्रयास नाकाम रहा (आयत 26क), मेशा ने एक चौंकाने वाली बात की (चौंकाने वाली, यानी परमेश्वर के दान के लिए): ''तब उस ने अपने जेठे पुत्र को जो उसके स्थान में राज्य करने वाला था पकड़कर शहरपनाह पर होमबलि चढ़ाया'' (आयत 27)। यह भेंट मोआबियों के ''देवता'' खामोश को चढ़ाई गई (देखें गिनती 21:29; 1 राजाओं 11:7, 33; 2 राजाओं 23:13; यिर्मयाह 48:7, 13, 46)। मूर्तिपूजकों का मानना था कि युद्ध में हार इस बात का प्रमाण थी कि ''देवता'' उनसे नाराज हो गए थे। उनके क्रोध को ठण्डा करने का तरीका नर बलि देना था। हमेशा का कृत्य इतना भयंकर था कि उसने निष्कर्ष निकाला कि खामोश उनसे *बहुत* नाराज होगा, जिस कारण उसने ऐसा बलिदान देना चुना जिसकी उसे सबसे अधिक कीमत चुकानी पड़ी। यानी उसने अपनी गद्दी का वारिस दे दिया। परमेश्वर की व्यवस्था में ऐसी बातों की निन्दा की गई है (देखें लैव्यव्यवस्था 18:21; 20:3; यिर्मयाह 7:31) परन्तु उन लोगों के मनों में कितना अंधेरा है, जो प्रभु को नहीं जानते।

विनाश

मैं उस त्रासद विषय में से जल्दी से तरसाने वाले परिणाम तक आता हूं। 2 राजाओं 3:27ख के अनुसार ''इस कारण इस्राएल पर बड़ा ही क्रोध हुआ, सो वे उसे [मोआब के राजा को] छोड़कर अपने देश को लौट गए।'' इब्रानी शब्द का अनुवाद ''प्रकोप,'' ''कोध'' (CJB) या ''अतिक्रोध'' (NIV) भी हो सकता है। टीकाकार इस मत से सहमत नहीं हैं। कइयों का मत है कि ''प्रकोप, क्रोध, अतिक्रोध'' मोआबियों का प्रकोप था, जिन्हें हमेशा के काम और इस्राएल को पीछे धकेलने से बदल दिया गया था।

अन्य का मानना है कि ''प्रकोप'' शब्द उस घृणित काम के लिए इस्राएलियों की प्रतिक्रिया थी यानी जो कुछ उन्होंने देखा उससे वे इतने परेशान हुए कि वे हताश होकर छोड़ गए। हैरल्ड स्टिगर ने सुझाव दिया है कि ''परिणाम यह दिखाते हुए कि इस्राएल में मूर्तियों की पूजा से क्यों फिरना चाहिए, एक सबक था। ... लगता है जैसे लेखक पूछ रहा हो: यदि इस्राएल इस मामले में इतना अधिक परेशान हुआ तो उसे इतना झटका क्यों नहीं लगा जिससे वह मूर्तिपूजा छोड़ देता ?''[16]

सी. एफ़. केल और एफ़. डैलिस ने ध्यान दिलाया है कि ''हर दूसरे मामले में जिसमें यह वाक्यांश आता है,'' इब्रानी शब्द का इस्तेमाल यहां ''*ईश्वरीय* प्रकोप या न्याय, जो मनुष्य पाप करने के द्वारा अपने ऊपर लाता है'' के रूप में हुआ है।[17] ऐसा होने के कारण कई लोग निष्कर्ष निकालते हैं कि परमेश्वर इस्राएलियों के साथ इतना क्रोधित था कि उसने मोआब के राजा को ऐसा घृणित कार्य करने के लिए ''मज़बूर'' होने दिया। परन्तु यह व्याख्या तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती क्योंकि जो कुछ इस्राएल ने किया था वह परमेश्वर का ही बताया हुआ था (तुलना आयतें

19 और 25)। सुझाव दिया गया है कि मूर्तिपूजक उत्तरी इस्राएल के साथ एक और समझौता करने के लिए यहोवा यहोशापात से नाराज़ हुआ और इसका कारण यही हो सकता है।

मैं एक और सम्भावना का सुझाव देता हूं: परमेश्वर का प्रकोप अन्त में इस्राएल के ऊपर इस्राएल के राजा योराम के विद्रोही स्वभाव के कारण पड़ा। परमेश्वर ने यहोशापात के कारण सेनाओं के लोगों को छोड़ दिया था। यहोवा ने सिपाहियों को मोआब के ऊपर ईश्वरीय दण्ड लाने के भी योग्य बनाया। याद रखें कि योराम के अभियान का उद्देश्य मोआब को उसके राज्य के लिए कर फिर से देने के लिए विवश करना था, और स्पष्टतया परमेश्वर इतनी आगे जाने को तैयार नहीं था। जिस कारण उसने सेना को पूर्ण विजय से पहले ही पीछे खींच लिया। मोआबी पत्थर पर, मेशा ने इस युद्ध में अपनी विजय घोषित कर दी। जहां तक हमें मालूम है, मोआब ने कभी इस्राएल को जज़िया नहीं दिया। क्या इसमें हमारे लिए कोई सबक था? शायद यह है: परमेश्वर के एक भक्त से सफलता मिल सकती है (आयत 14), जबकि एक दुष्ट से विपत्ति आ सकती है।

सारांश

एलीशा के जीवन की इस घटना से कई सच्चाइयां सीखी जा सकती हैं, परन्तु मैं केवल तीन की बात करना चाहूंगा:

- परमेश्वर देश की सामर्थ है (आयत 13)।
- परमेश्वर के भक्त पुरुष और स्त्रियां देश की आशा हैं (आयत 14)।
- प्रार्थना देश की जीवन रेखा हैं (आयतें 11, 20क)।

इन आवश्यक सच्चाइयों से खोजी प्रश्न बनने चाहिए: क्या हम प्रभु पर निर्भर हैं या अपने बनाए ''देवताओं'' पर? क्या हम ऐसे पुरुष और स्त्रियां हैं, जो हमारे देश को आशीष दें या इसके ऊपर श्राप लाएं? जब आफ़त आती है, तो हम किधर जाते हैं? क्या हम सर्वशक्तिमान की इच्छा जानने की खोज करते हैं?

टिप्पणियां

[1]मोआबी पत्थर, एक प्राचीन काले आतिशी पत्थर की स्लैब जिस पर लिखा हुआ है, उमरी (अहाब का पिता) के समय से इस्राएल के साथ मेशा की लड़ाइयों की बात बताती है–बेशक मेशा के दृष्टिकोण से। उस शिलालेख की अन्तिम पक्तियां सम्भवतया 2 राजाओं 3 वाली सैनिक कार्यवाही की बात करती हैं जिसमें मेशा ने विजय का दावा किया। [2]एक और तथ्य यहोशापात ने अपने पुत्र यहोराम को अहाब की बेटी और योराम की बहन अतल्याह से विवाह करने की अनुमति दी। इस प्रकार एक अर्थ में योराम यहोशापात के लिए ''परिवार'' था (देखें 2 राजाओं 8:24–27; 2 इतिहास 18:1)। [3]ऐदोम एक मातहत देश था, जिस कारण उसका अपना वास्तविक राजा नहीं था; बल्कि यहोशापात द्वारा ठहराया गया उप (राजपाल) था। इस मुखतार को ''राजा'' की मानद उपाधि दी गई थी (1 रजाओं 22:47)। [4]सी. एफ़. केल एंड एफ़. डैलिस, ''1 एण्ड 2 किंग्स,'' कमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामेंट, अंक 3, 1 एण्ड 2 किंग्ज़, 1 एण्ड 2 क्रोनिकल्स, एज्रा, नहेमायाह, एस्थर (पीबॉडी, मैसाचुएटसः हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 303. [5]इस जानकारी का उल्लेख CBS कम्पनी 9 अक्टूबर 2003 को टेलीविज़न कार्यक्रम में किया गया। [6]एफ़. डब्ल्यू. क्रमुचर एलीशा, ए प्रोफेट फ़ॉर अवर टाइम्स (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः क्रेगल पब्लिकेशंस, 1993), 32. क्रमचर में गधों की जगह ''ऊंट'' थे, परन्तु कुछ अधिकारी इस पर संदेह करते हैं कि इस्राएली लोग ऊंटों

का इस्तेमाल करते हों। [7]जैसे पहले बताया गया है कि यह भी सम्भव है कि एलीशा एलिय्याह के प्रतिनिधि के रूप में आया होगा। ऐसा होने पर एलिय्याह को यहोवा ने ही एलीशा को भेजने को कहा होगा। [8]एडम क्लार्क, दि होली बाइबल विद ए कमैंट्री एंड क्रिटिकल नोट्स, अंक 2, जोशूआ–ऐस्तर (न्यू यॉर्क: एबिंग्डन–कोक्सबरी प्रैस, तिथि नहीं), 488. [9]डोनल्ड जे. वाइसमैन, 1 एण्ड 2 किंग्ज़: एन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्रीज़, टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1993), 200. [10]विलियम कोनग्रेव (1670–1729), दि मॉर्निंग ब्राइड [1697], I.1; जॉन बार्टलेट, बार्टलेट'स फेमिलियर कोटेशंस, 16वां, संपा. जस्टिन कपलन (बोस्टन: टाइटल, ब्राउन एंड कं., 1992), 291 में उद्धृत।

[11]आरम्भिक धर्मशास्त्रों में कुछ विभिन्नता पाई जाती है। RSV में ''यहोवा तो कहता है, 'मैं इस सूखी नदी को तालाबों से भर दूंगा।''' अधिकतर अनुवादों में NASB से मिलता जुलता अनुवाद है। [12]मोआबी लोग जंगल में घूमने के समय से ही इस्राएलियों के शत्रु थे (गिनती 22–25)। [13]जे. टी. हेडली, *सेक्रेड हीरोज एंड मार्टिस,* संशो. व संपा. जे. डब्ल्यू. किरटन (लंदन: वार्ड, लॉक, एंड टाइलर, तिथि नहीं), 191. [14]जी. राविल्सन, ''2 किंग्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 5, *1 और 2 किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. सपेंस एंड जोसेफ एस. एक्सल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950) 46. [15]वही। [16]हेरल्ड स्टाइगर्स, ''2 किंग्स,'' *दि वाइक्लिफ बाइबल कमैंट्री,* संपा. चार्ल्स एफ. फेफर (नैशविल्ले: साउथ वेस्टर्न कं., 1962), 343–44. [17]केल एंड डेनिस, 307.